राष्ट्रोपनिषत्-प्रस्तावना-शतकम्

रचयिता
आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कार
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वर स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर

(गताङ्कादग्रे) **धर्माचरणं सम्प्रति, विपुलाडम्बर - ग्रस्तं लोलुक्यते ।**
वृथैवात्र लोकानां, श्रम-धन-समय-नाशः किं न बोभवीति ? ॥77॥

वर्तमान में धर्माचरण बहुत आडम्बरों से ग्रस्त हुआ देखा जा रहा है। क्या इस आडम्बर में लोगों का व्यर्थ ही श्रम, धन और समय का बहुत सारा नाश नहीं हो रहा है ?

Today religiousness can be seen to be afflicted with pomp. Aren't the effort, time and money destroyed with the pomposity?

धर्माचार्याः किमत्र सन्ति मौनिनः ? किमङ्कुशं नहि निदधति ? ।
देवता - चित्राणीह, पददलितानि दृष्ट्वा व्यथितं मनो नः ॥78॥

धर्माचार्य इस और क्यों मौनी बने बैठे हैं ? वे इस आडम्बर पर क्यों नहीं अङ्कुश रखते ? इस आडम्बर में देवताओं के चित्रों को पद-दलित होते देख कर, हे गुरुदेव ! हमारा मन तो बहुत व्यथित हो रहा है।

Why are the religious leaders silent on the matter? Why don't they put the stop on this pompousness? Oh Gurudev, we feel distressed by seeing that the importance of the gods is being reduced by it.

जगद्गुरु वोऽपि नैके, स्वयम्भुवः सन्ति यत्र तत्र सर्वत्र ।
किं तेऽपि नहि समाजं, त्यक्तुं धर्माडम्बरं समुपदिशन्ति ? ॥79॥

यत्र तत्र सर्वत्र स्वयम्भू जगदुरु भी बहुत हैं। वे भी समाज को धर्माडम्बर त्यागने के लिये क्यों नहीं उपदेश देते हैं ?

Here and there, everywhere are many self-proclaimed Jagadgurus (gurus of the world). Why don't they preach renouncing of the religious pompousness?

तेषां च यदि समाजः, करोत्युपेक्षां न च शृणोति तद्वचांसि ।
जगद्गुरुत्वगौरवं, तत् किं पुनस्तदीयं न विनश्यतीह ? ॥80॥

और यदि समाज उन जगद्गुरुओं की उपेक्षा करता है और उनके वचन नहीं सुनता है, तो क्या फिर उनके जगद्गुरु होने का गौरव यहाँ विनष्ट नहीं होता ?

And if the society ignores those Jagatgurus and doesn't follow their words, isn't it then the grace/prestige of being a Jagatguru destroyed?

निर्धनो निर्धनतरो, धनिको धनिकतरश्च यत्र बोभवीति ।
तत्र तु राष्ट्राभ्युदयो, जनिष्यते कथमिति महती चिन्ता नः ॥81॥

जहाँ निर्धन ज्यादा निर्धन और धनिक ज्यादा धनिक होता जाता है, वहाँ तो राष्ट्र का अभ्युदय कैसे होगा ? यह हमारी बहुत बड़ी चिन्ता है।

How is it possible for the country to prosper if the poor are getting poorer and rich are getting richer? This is our great worry.

यावन्न शासनं स्वां, सुधारयितुं रीतिं ध्यानं दास्यते ।
तावत् स्वराष्ट्राभ्युदयदर्शनं दुर्लभमेव किमस्ति न हीह ? ॥82॥

जब तक शासन अपनी रीति को सुधारने के लिये ध्यान नहीं देगा, तब तक अपने राष्ट्र के अभ्युदय का दर्शन क्या यहाँ दुर्लभ ही नहीं रहेगा ?

Until the rulers give attention to their policy, won't our country's progress be a faraway dream?

भौतिक-समृद्धौ यथा, शासनं वरीवर्त्ति जागरूकम् ।
तथाऽऽध्यात्मिक - समृद्धौ, प्रसुप्तमेव दरीदृश्यते ॥83॥

शासन जिस प्रकार भौतिक समृद्धि के विषय में जागरूक है, उस प्रकार वह शासन आध्यात्मिक समृद्धि के विषय में तो प्रसुप्त सा ही दिखायी देता है ।

As much the administration is active/attentive in achieving the material prosperity it is inactive in achieving the spiritual one.

(क्रमशः)